## Ex/CBCS/SAN/UG/GE/3.8/2023

## BACHELOR OF ARTS EXAMINATION, 2023

(2nd Year, 3rd Semester)

## SANSKRIT (GE)

Course – GE(3.8)

## [ Ancient Indian Political Thought ]

Time: Two hours Full Marks: 30

The figures in the margin indicate full marks.

- Answer any four of the following questions: 1×4=4
   (নিম্নোক্ত প্রশ্নগুলির মধ্যে যে কোনও চারটির উত্তর দাও)
  - a) Write the meaning of the word राजधर्म: ।
     राजधर्म: শব্দের অর্থ লেখা।
  - b) What is meant by अधरोत्तरम्ं?अधरोत्तरम्ं শব্দের দ্বারা কী বোঝায়?
  - c) What is meant by the word 'दुरुपसर्पिणम्'? 'दुरुपसर्पिणम्'— বলতে কী বোঝায়?
  - d) Disjoin all the Sandhis and rewrite the following sentence.

मिक्षितिएष्ट्रम भूर्वक वाकाि भूनताः (लाट्या। यथार्हतः सम्प्रणयेन्नरेष्वन्यायवर्तिषु।

e) Why has the king been compared to the sun? রাজাকে কেন সূর্যের সঙ্গে তুলনা করা হয়েছে?

[ Turn over

अथवा

5

2.	Discuss the nature and function of the Sceptre in the lig	ght
	of Manu's observations.	5
	মনুর মতের আলোকে দণ্ডের প্রকৃতি ও কার্যকারিতা বিষয়ে আলো	চনা
	করো।	

- Explain any one of the following:
   যেকোন একটি ব্যাখ্যা করো।
  - a) यस्य प्रसादे पद्मा श्रीर्विजयश्च पराक्रमे। मृत्युश्च वसति क्रोधे सर्वतेजोमयो हि सः॥
  - b) एवंवृत्तस्य नृपतेः शिलोञ्छेनापि जीवनः। विस्तीर्यते यशो लोके तैलबिन्दुरिवाम्भसि॥
- 4. Briefly describe the qualities of the kings of the Sūrya dynasty as found in the Raghuvamśa.
   5
   রঘুবংশে প্রাপ্ত সূর্যবংশীয় রাজাদের গুণাবলী বর্ণনা করো।

Or

Write short note on **any two** of the following: 2.5×2 যে কোন **দুটি** সম্বন্ধে সংক্ষিপ্ত টীকা লেখো। क्षात्रधर्म:, वैवस्वतो मनु:, दानधर्म:।

- 5. What is the eightfold path of Dharma? 2 ধর্মের অস্টবিধ মার্গ কী?
- 6. Translate **any one** of the following verses into Bengali or English:

  4
  বাংলা অথবা ইংরেজী ভাষায় অনুবাদ করো (যেকোন একটি) ঃ

- प्रजानामेव भूत्यर्थं स ताभ्यो बलिमग्रहीत्॥
   सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रिवः॥
- b) न संशयमनारुह्म नरो भद्राणि पश्यति। संशयं पुनरारुह्म यदि जीवति पश्यति॥
- Explain: न्यांशा करता।
   क्व सूर्यप्रभवो वंश: क्व चाल्पविषया मित:।
   तितीर्षुर्दुस्तरं मोहादुडुपेनास्मि सागरम्॥

न धर्मशास्त्रं पठतीति कारणं न चापि वेदाध्ययनं दुरात्मनः। स्वभाव एवात्र तथातिच्यिते यथा प्रकृत्या मधुरं गवां पयः॥